13.07.2020.

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science.
B.A 1st year part-2. political theory

Topic- Nationalism Lecture-64.

राष्ट्र की परिभाषा (Definition of Nation)

राजनीतिक विचारकों ने राष्ट्र शब्द की परिभाषा अलग-अलग दृष्टिकोण से दी है। राष्ट्र की परिभाषा मुख्य रूप से तीन दृष्टिकोण से की गई है। कई विद्वानों ने परिभाषा का आधार शब्द की उत्पत्ति को माना है तथा कई राजनीतिशास्त्रियों ने राजनीतिक दृष्टिकोण को तथा कई अन्य ऐसे विद्वान भी हैं जिन्होंने राष्ट्र की परिभाषा संस्कृति एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर दी है। इन सबका विवरण निम्नलिखित है।

1. शब्द की उत्पत्ति की दृष्टि से (राष्ट्र की परिभाषा) Approach related to the origin of the word 'Nation' Definition of Nation] — राष्ट्र शब्द (Nation) Latin भाषा के नेशियो (Natio) शब्द से निकला है। लातीनी भाषा में 'नेशियो' शब्द का अर्थ 'जन्म' अथवा 'जाति' है। शब्द की उत्पत्ति की दृष्टि से राष्ट्र का अर्थ हुआ वह जनसमूह जो वंश अथवा जन्म की एकता से बंधा हुआ हो। जिन विद्वानों ने जाति या शब्द की उत्पत्ति को आधार मानकर राष्ट्र की परिभाषा दी है, उनमें प्रमुख Burgess, Leacock तथा प्रेडियर फ्रोरे हैं।

Burgess के अनुसार, "राष्ट्र भौगोलिक एकता वाले निश्चित इलाके में रहती हुई एक ही जाति की जनसंख्या है।"

Leacock के अनुसार "यद्यपि राष्ट्र शब्द का प्रयोग बहुत हल्के रूप में किया है, परन्तु उसको नस्ल सम्बन्धी रूप में समझना आसान है। उनके अनुसार,

"राष्ट्र से अभिप्राय एक जाति अथवा वंशगत विशेषताओं वाला मानव संगठन है।"

अग्रलिखित राष्ट्र की परिभाषा को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता। इनके आलोचकों का तर्क है कि वर्तमान युग में जाति की एकता को राष्ट्र का आधार मानना उचित नहीं है।

2. राजनीतिक एकता सम्बन्धी दृष्टिकोण (Approach related to political unity)

जाति, वंश या नस्लीय आधार पर राष्ट्र की परिभाषा को राजनीतिक एकता के सन्दर्भ में समझने का प्रयास किया है। वे राष्ट्र के राजनीतिक स्वरूप को अधिक महत्व देते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार राष्ट्र की परिभाषा इस प्रकार है—

Hayes के अनुसार, "एक राष्ट्रीयता राजनीतिक एकता व सम्प्रभुता को प्राप्त करके राष्ट्र बन जाती है।"

Lord Bryce – राष्ट्र व राष्ट्रीयता वह है जिसने अपने आप को स्वतन्त्र या स्वतन्त्र होने की इच्छा रखने वाले राजनीतिक संस्था के रूप में संगठित कर लिया।"

3. सांस्कृतिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण (Cultural and Psychological Approach)- इस दृष्टिकोण को भावनात्मक एकता सम्बन्धी दृष्टिकोण भी कहा जा सकता है। कुछ विद्वानों का मत है कि राष्ट्र के निर्माण के लिए जाति या नस्ल का साझा होना ही पर्याप्त नहीं है। परन्तु उसके लिए लोगों में सद्भावनाएँ व मानसिक एकता होनी चाहिए। ये विद्वान भावनात्मक व सांस्कृतिक एकता को राष्ट्र का मुख्य आधार मानते हैं।

– Bluntschli के अनुसार "राष्ट्र ऐसे मनुष्यों के समूह को कहते हैं जो विशेषतया

भाषा और रीति-रिवाजो के द्वारा एक समान सुरूपता से बंधे हुए हो, जिससे उनमें अन्य सभी विदेशियो से अलग एकता की सुदृढ़ भावना पैदा होती हो।'

- Zimmern के शब्दो मे "राष्ट्र ऐसे लोगो का समूह है जोकि एक विशेष भावुकता, सामीप्य और गौरव की संयुक्त भावना द्वारा संलग्न होते है और जो एक मातृभूमि से सम्बन्धित है।

— अत: राष्ट्र की परिभाषा के बारे में विद्वानों ने अलग अलग दृष्टिकोण को लिया है। फिर भी हम यह स्वीकार कर सकते हैं कि राष्ट्र केवल नस्ल जाति पर आधारित नहीं हो सकता। इसी तरह राष्ट्र के लिए राष्ट्र राज्य की भी आवश्यकता नहीं है। (... A nation is not necessarily a people organised as a state nor is a state essentially a nation).

Lord Bryce के शब्दो मे "राष्ट्रीयता व जनसंख्या है जो भाषा, साहित्य और विचार, प्रथाओ और परम्पराओं जैसे बन्धनों मे परस्पर इस तरह बंधी हुई हो कि वह अपनी ठोस एकता अनुभव करे तथा उन्हीं आधारों पर बंधी हुई जनसंख्या से अपने-आप को भिन्न समझे।'

राष्ट्र और राष्ट्रीयता मे अन्तर — सामान्य रूप से राष्ट्र व राष्ट्रीयता को एक ही समझा जाता है, क्योकि दोनो शब्दो का उद्भव लैटिन भाषा के शब्द नेशियो (Natio) से हुआ है। परन्तु इन दोनों मे वैज्ञानिक अन्तर तो अवश्य है तथा यह अन्तर इतना कम है कि इन दोनो के बीच विभाजक रेखा ढूंढना मुश्किल कार्य हो जाता है। कुछ कारणों या तथ्यो के वर्णन के पश्चात दोनो मे अन्तर को स्पष्ट किया जा सकता है।